शमशेर की कविता : अभिव्यंजना शिल्प

रवीन्द्रनाथ मिश्र

शमशेर प्रबुद्ध पाठक के कवि हैं। जिनकी काव्य-संवेदना और अभिव्यक्ति दोनों दुर्बोध एवं जटिल हैं। शमशेर को पढ़ते हुए मस्तक पर सिलवटें उभरने लगती हैं उनके कविता की अपनी नई ज़मीन है जिसे उन्होंने स्वंय खोद-ख़ादकर उर्वर बनाया है। यह सही है कि उसकी उर्वरता के लिए परिवेशगत हवा, पानी और प्रकाश का सहारा लिया गया है। इनकी कविताओं में नागार्जुन का देशी ठाठ, केदार का ग्रामीण-बोध, सर्वेश्वर की मध्य-वर्गीय सोच, धूमिल की सपाट बयानी दुष्यंत की समसामयिक दाहकता, अज्ञेय की निजी वैक्तिकता, दिनकर की राष्ट्रीयता, बच्चन और नरेन्द्र शर्मा की कवि मंचीयता आदि विद्यमान नहीं है। शमशेर ने भारतीय और पाश्चात्य साहित्य का गहन अध्ययन किया था। ये किसी वाद, विषय, फार्म, शैली, भाषा आदि की समीाओं से नहीं बंधे और न तो छपने के प्रति कभी लालायित रहे। एक तरह से कहें तो इनका लेखन मनमौजी-सा रहा है लेकिन उसमें मानव, समाज, देश आदि की चिंताए बराबर बनी हुई हैं। दरअसल इन्होंने अपनी निजी अनुभूतियों को काव्य के विविध रूपों में विलक्षण बुनावट एवं बनावट के साथ बड़ी निर्भीकता के साथ पाठकों के समक्ष रखा। यही कारण है कि अपने समय के कवियों से इनकी एक अलग पहचान बनी। धर्मवीर भारती का यह मन्तव्य इन पर सटीक बैठता है—"कलाकृति, चाहे वह शब्दों में हो या संगीत्मक ध्वनियों में, चाहे रंगो और रेखाओं में हो या स्थापन में... किंतु उससे कलाकार के अंतर्जगत का निकटतम संबंध रहता है।" (साहित्य और मानवीय मूल्य...) कवि के साथ पत्रकार और चित्रकार होने के कारण शमशेर ने अपने अंतःकरण की अनुभूतियों को नवीन ढंग से पैनी धार देते हुए व्यक्त किया। वस्तुतः आधुनिक एवं समकालीन युग के अधिकांश कवि अपने समय की ख़ास प्रवृत्तियों, विचारधाराओं और युगीन समसामयिक धड़कनों से जुड़े रहे। लेकिन ऐसा हम शमशेर के विषय में यह नहीं कह सकते क्योंकि इन्होंने अपनी कविता की अलग डगर चुनी। इस संबंध में वे स्वयं अपने मतों का खुलासा करते हैं—"कवि का कर्म अपनी भावनाओं में, अपने प्रेरणाओं में, अपनी आंतरिक संस्कारों में, समाज सत्य के मर्म को ढालना—उसमें अपने को पाना है और उस पाने को अपनी पूरी कलात्मक क्षमता से पूरी सच्चाई के साथ व्यक्त करना है, जहां तक वह कर सकता हो।" (कुछ और कविताएं-काव्य संग्रह के पहले संस्करण के वक्तव्य से)

वस्तुतः विषय, भाव, विचार, संवेदना, भाषा, शैली आदि के औचित्यपूर्ण सामंजस्य से ही रचना उत्कृष्ट कोटि की बनती है। यहां हम काव्य संवेदना और शिल्प को अलग करके नहीं देख सकते। ये दोनो एक-दूसरे के पूरक हैं। मूल्य की अवधारणा की भांति शिल्प के स्वरूप में भी समय के साथ बदलावा आया और इन दोनों का संबंध साहित्य से भी जुड़ गया है। भारतीय परंपरा के अनुसार काव्य, कला और शिल्प-तीनों अलग-अलग हैं लेकिन पश्चिम में काव्य को प्रारंभ से ही कला माना गया है। इस संबंध में भी वैविध्य मत हैं। यहां मैं संक्षिप्त रूप से शिल्प की अवधारणा पर प्रकाश डाल देना समीचीन समझता हूं। साहित्य कोश के अनुसार "मूलतः इसका प्रयोग उपयोगी क़लाओं के निर्माण की क्षमता के लिए होता है, किंतु उपचार से इसका प्रयोग ललित कलाओं के लिए किया जाता है। यहां इससे अभिप्राय है रचना की दक्षता की निपुणता से। किसी भी उत्कृष्ट रचना में भावों का गांभीर्य, विचारों की गरिमा एवं शैली का उत्कर्ष तो पाया ही जाता है, किंतु साथ ही जब समग्र रूप से उस रचना का मूल्याकंन करते हैं तो इन तत्वों की निजी अवस्थिति एवं इनके विकास का अध्ययन भी करते हैं और साथ ही इन सभी तत्त्वों की पारस्परिक संबद्ध-समरस योजना एवं निर्वाह का विवेचन भी करते हैं। यह योजना एवं निर्वाह कलाकार की कला-विषयक निपुणता या दक्षता पर निर्भर करता है। इसे ही कला का शिल्प कहते हैं।"

साहित्यकार अपनी संपूर्ण प्रतिभा का ससंधान भाषा के माध्यम से करता है। कविता में भाषा अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख तत्व है, जिसका उल्लेख काव्य की परिभाषाओं में किया गया है। भाषा शिल्प का प्रमुख एवं बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, मुहावरे आदि अन्य तत्व हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो इन तत्वों में भी हम भाषा के ही विभिन्न रूपों, उसी की विभिन्न क्षमताओं का अध्ययन करते हैं। कविता अपने रूपविधान में ही मूर्त होती है। इस दृष्टि से शमशेर की कविता के शिल्प विधान की चर्चा उनकी काव्य-संवेदना के साथ करना उचित होगा। इनके विविध काव्य-संग्रहों के अवलोकन से पता चलता है कि ये कभी भी किसी विचारधारा से प्रतिबद्ध नहीं रहे। टैगोर, निराला, पंत, त्रिलोचन, टेनीसन, शैली, कीट्स आदि कई रचनाकारों से प्रभावित रहे। इन्होंने व्यक्तियों, स्थानों, समसामयिक घटनाओं को केंद्र में रखकर भी कविताएं लिखी हैं। कवि की प्रारंभिक कविताओं का रुझान छायावादी प्रवृत्तियों की ओर रहा है। उनमें प्रमुख रूप में नारी-प्रकृति प्रेम के साथ-साथ व्यक्ति, समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन आदि के स्वर भी विद्यमान हैं। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि उन्होंने किसी आन्दोलन की परवाह न करते हुए अपनी आत्मा की आवाज़, अनुभव और आस्वाद को अधिक महत्व दिया। वे यदि कहीं भूलकर राह भटके तो निराला ने उनका हाथ थाम लिया। उनकी 'पी गया हूं दृश्य वर्षा का/हर्ष बादल का/हृदय में भरकर हुआ हूं हवा-सा हल्का' कविता की पंक्तियों पर 'बादल राग' की पंक्ति 'वर्ष का हर्ष' का सीधा प्रभाव देखा जा सकता है। निराला की भांति इनके रोमानी भाव प्रकृति में घुलमिल कर व्यक्त हुए हैं लेकिन कथन की भावभंगिमा अलग है। इनमें प्रेम का गहरा और मीठा दर्द, सौंदर्य की ललक, प्रकृति के कोमल-रमणीय चित्रों के माध्यम से बिंबात्मक ढंग से व्यक्त हुई है। उनके भावों में दार्शनिकता है और साथ ही प्रकृति विषयक बिंबो—बरसात, रात-दिन, सुबह-शाम, चांदनी, मेघ, धूप, झरने, पर्वत, तारे, सूर्य, बसंत, शरद, घास, दूब आदि के विचित्र चित्र मिलते हैं। निजी रागात्मक अनुभूतियों को कवि ने भाव और भाषा के धरातल पर अपनी 'दूब' नामक कविता में सशक्त अभिव्यक्ति दी है। जिसमें प्रकृति के सुरम्य वातावरण में नारी-प्रेम की मिठास को सुंदर प्राकृतिक बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

मोटी, धुली लॉन की दूब/साफ़ मख़मल की क़ालीन।
ठंडी धुली सुनहरी धूप/हलकी मीठी चा-सा दिन,
मीठी-चुस्की-सी बातें/मुलायम बाहों-सा अपनाव।
पलकों पर हौले-हौले/तुम्हारे फूल-से पांव
मानो भूल कर पड़ते/हृदय के सपनों पर मेरे!
अकेला हूं, आओ! (कुछ कविताएं-36)

इसी प्रकार कवि ने 'एक पीली शाम' कविता में प्रेम और प्रकृति को सानकर अद्भुत चित्र प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त 'छिप गया वह मुख', 'साग तट', 'गीली मुलायम लटें' आदि कविताएं रोमांटिक एवं काल्पनिक भावों से सजी हुई हैं। रीति एवं आधुनिक काल के कवियों की दृष्टि नारी-प्रेम के अंतर्गत उसके 'नाम की स्पेलिंग' और 'दांत पर चिपके हुए दूब के तिनके' पर नहीं गई होगी लेकिन यहां तो शमशेर अपरिचित सौंदर्य की तलाश करते हैं। यही है उनकी कविता का अनूठापन। कवि ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'टूटी हुई, बिखरी हुई' में कई बिंबो, प्रतीकों, और उपमानों का सुंदर प्रयोग किया है।

एक खुशबू जो मेरी पलकों में इशारों की तरह
बस गई है, जैसे तुम्हारे नाम की नन्हीं-सी
स्पेलिंग हो, छोटी-सी प्यारी-सी, तिरछी स्पेलिंग,
आह, तुम्हारे दांतो से जो दूब के तिनके की नोक
उस पिकनिक में चिपकी रह गई थी,
आज तक मेरी नींद में गड़ती है।

(कुछ और कविताएं-135)

भारतीय एवं सूफ़ी सहित्य में प्रेमिका के नख-शिख और शिख-नख के सौंदर्य का वर्णन तो मिलता है लेकिन 'दूब के तिनके का नींद में गड़ना' एक अनूठा प्रयोग है। विश्वनाथ त्रिपाठी के कथनानुसार—'प्रेमिका के आकर्षण का गठन इस प्रकार है कि इन्द्रिय-बोध के कई प्रकार सादृश्य में आ गए हैं। खुशबू पलकों का इशारा बन गई है। और यह सौंदर्य साक्षात्कार का वैसा ही आयाम है जैसा कि प्रेमिका के नाम की तिरछी स्पेलिंग।' (आजकल-सितंबर 1993) यहां कवि प्रेमिका की तिरछी स्पेलिंग देखकर भावविभोर हो जाता है। दरअसल 'टूटी हुई बिखरी हुई' कविता उनके अंतरंग प्रेम की अनुभूतियों की कविता है। काव्य समीक्षक राहुल का मानना है कि 'सौंदर्य लोक में विचरण करने वाले कवि शमशेर ने मानवीय इन्द्रियों को तृप्त करने वाली प्राकृतिक छवियों के अंकन में अद्वितीय सिद्धि पाई है। प्राकृतिक उपादानों में वर्ण-गंध-रंग-रूप-स्वाद-ध्वनि आदि के चित्रण में उनकी विशेष रुचि तो थी ही, साथ ही

उनका रुझान रूपवाद-पभाववाद की ओर भी था। उनकी कृतियों में प्रकृति-चित्र के साथ नारी-सौंदर्य के भाव-बिंब हैं।" (शमशेर और उनकी कविता) शमशेर एक बड़े कवि के साथ-साथ चित्रकार भी थे। उन्हें इससे बड़ा मोह था। प्रकृति के रूप-रंग-गंध के विविध वर्णों के अंकन के साथ उनकी कविता में रंगो की कोशिश देखिए–

कत्थई गुलाब/दबाए हुए है/नर्म नर्म/केसरिया सांवलापन मानो शाम की/अंगूरी रेशम की झलक कोमल कोहरिल/बिजलियों-सी लहराए हुए हैं। (इतने पास अपने-17)

शमशेर जहां प्रकृति-नारी संबंधी रोमानी भावों को विविध बिंबो, प्रतीकों और उपमानों के साथ ताज़ी भाषा में व्यक्त करते हैं वहीं पर उनके अंदर मौजूद मार्क्सवादी विचार धारा के अणु और राष्ट्रीयता के परमाणु भी विद्यमान हैं। वे नागार्जुन, मुक्तिबोध, केदार, त्रिलोचन, सुमन की भांति मार्क्सवादी नहीं हैं, लेकिन वे इस बात को स्वीकार करते हैं कि 'मार्क्सवाद से नज़रिया बेहतर, वैज्ञानिक और विश्सनीय होने के साथ-साथ दृष्टि में विस्तार मिलता है और विश्व-बंधुता का अहसास भी होता है। मार्क्सवाद से रचनाकार को दिशा मिलती है और उसकी वेदना में धार आ पा पाती है।' 'वाम वाम वाम दिशा', 'बैल' आदि कविताएं उनकी मार्क्सवादी दृष्टि की सार्थक पहचान कराती हैं।

मगर मुश्किल यह है/कि मालिक मेरी नस-नस को जानता और समझता है/वह मुझसे मेरी मूक भाषा में अच्छी तरह/बात करता है/मुझे वह इस तरह निचोड़ता है जैसे/घानी में एक-एक बीज कसकर दबाकर/पेरा जाता है/मेरे लहू की एक-एक बूंद किसके लिए/समर्पित होती है/यह तर्पण किसके लिए होती है। (काल तुझसे होड़ है मेरी-20)

शमशेर का दृष्टिकोण समाजवादी था। मार्क्स का चिंतन उनकी चेतना में था। वे कमकरों, श्रमकरों, शोषितों, किसानों, दलितों आदि के प्रति निरंतर सहदय बने रहे लेकिन झंडाबरदार नहीं थे।

यह किसान कमकर की भूमि है
पावन बलिदानों की भूमि है
भव के अरमानो की भूमि है
मानव इतिहास को संवारती है। (प्रतिनिधि कविताएं-71)

आज जिस भूमंडलीकरण और विश्वबंधुत्व की बात करते हुए हम संसार के कई देशों से हाथ मिला रहे हैं, उसकी सफल अभिव्यक्तिं कवि की 'अमन का राग' नामक कविता में हुई है। प्रस्तुत कविता में मानवीय सुख-शांति की कामना और सहबंधुत्व की भावना से विश्व के चिंतकों, मनीषियों, कवियों कलाकारों, दार्शनिकों आदि को एक-दूसरे के आंगन में ला खड़ा किया गया है। यहां कवि की मानवतावादी चिंतन का उत्कर्ष रूप प्रकृति के विभिन्न उपादानों के माध्यम से नवीन शैली में प्रस्तुत किया गया है–

हम एक साथ उषा के मधुर अधर बन उठे/सुलग उठे हैं
सब एक साथ ढाई अरब धड़कनों में बज उठे हैं
सिंफोनिक आनंद की तरह/यह हमारी गाती हुई एकता
संसार के पंच परमेश्वर का मुकुट पहन
अमरता के सिंहासन पर आज हमारा अखिल लोकप्रेसिडेंट बन उठी है। (कुछ और कविताएं-98)

वे सौंदर्यबोध-मार्क्सवादी, साम्यवादी चेतना और राष्ट्रीय भावधारा के भी प्रबल समर्थक कवि हैं। उनकी कतिपय रचनाओं में भारतीय दार्शनिकता और संस्कृति के प्रति अगाध आस्था कूट-कूट कर भरी हुई है। यथा 'एक नया गान/उठा/बजा नहीं बीन/उठें/स्वर के पांखी/लय के सरसी/जंगे/एक मोह-मान/बनता जीवन/हरता सम्मान/प्राण/नींद का समाज/जुड़ता-जुड़ता जड़ता बन आज/सांत्वना का ले../ब्याज। (चुका भी हूं नहीं मैं-97)

प्रत्येक कलाकार अपनी कला का एक मानस चित्र तैयार करता है और उसके पश्चात उसको मूर्त रूप देता है। बाबू गुलाबराय ने लिखा है–"प्रकृति परमेश्वर की कला है तो कला मानव की कला है।" शमशेर कलावादी कवि थे। उनके लिए कला हार के समान थी। वे कविता लिखने के पूर्व चित्र बनाते थे। उनकी कविता को हम 'चित्र कविता' भी मान सकते हैं। शमशेर को पेंटिंग पसंद थी और वे प्रमुख रूप से पीला-नीला-लाल रंगो का प्रयोग खूब करते थे।

पच्छिम में काले और सफ़ेद फ़ूल हैं और पूरब में पीले और लाल

उत्तर में नीले कई रंग के और हमारे यहां चंपई-सांवले

और दुनिया में हरियाली कहां नहीं। (प्रतिनिधि कविताएं-96)

शमशेर सौंदर्य प्रेमी कवि हैं। उनकी सौंदर्यप्रियता कहीं न कहीं रीतिवादी कविता से जुड़ती है। ग़ज़ल उनके एकांत क्षणों के मनबहलाव की उपज है। उन्होंने अपने एक निबंध में स्वयं

स्वीकार किया है—'ग़ज़ल मेरी भावुकता और आतरिक अभावों की, अपने तौर पर भली-बुरी एक मौन साथी थी।' शमशेर की ग़ज़ल परंपरा और समकालीन हिंदी ग़ज़ल से हटकर नया रास्ता तय करती है। रंजना अरगड़े ने 'सुकून की तलाश' नामक पुस्तक में उनकी ग़ज़लों, रुबाइयों, नज़्मों और शेरो को संकलित किया है।

अपने दिल का हाल यारो/हम किसी से क्या कहें/कोई भी ऐसा नहीं मिलता जिसे अपना कहें। हो चुकी जब खत्म अपनी ज़िंदगी की दास्तां/उनकी फ़रमाइश हुई है, इसको दोबारा कहें।

शमशेर को भाषा के धरातल पर ग़ज़ल लिखने में कोई दिक़्क़त नहीं हुई क्योंकि उनके ज़माने में सामान्य तौर पर उर्दू का प्रयोग हिंदी की ही भांति होता था। उन्होंने स्नातक तक उर्दू को एक विषय के रूप में पढ़ा था और कालांतर में दिल्ली विश्वविद्यालय की एक योजना के अंतगर्त 'उर्दू-हिंदी कोश' का संपादन भी किया था। शमशेर के समकालीन हिंदी कवियों में किसी के पास ऐसा उर्दू भाषा-साहित्य का समृद्ध संस्कार नहीं था। वे रदीफ़ और क़ाफ़िए के विश्लेषण में न जाकर ग़ज़ल के सौंदर्य पर मुग्ध होते थे। प्रेमचंद की भांति ये भी उर्दू से हिंदी में आए और पहचान हिंदी कवि के रूप में ही बनी। ग़ज़ल इनका साइड रचना-धर्म था।

हिंदी कविता में शमशेर पाठकों और श्रोतओं की परवाह न करते हुए अपने आंतरिक जगत में लीन होकर नए-नए शब्द, उपमान, बिंब, प्रतीक और मुहावरे गढ़ते रहे और उसी के द्वारा उनकी एक अलग ख़्याति भी निर्मित हुई। उन्होंने व्याकरण के नियमों की परवाह कभी नहीं की। भाषा सामग्री का भंडार होते हुए भी वे उनके प्रयोग में कंजूसी करते हैं और प्रायः वाक्य अधूरा छोड़ देते हैं। शायद उनका यह मानना था कि अपूर्ण वाक्यों से भाव धारदार बनता है। मुक्तिबोध का मानना है कि 'वे मूलतः चित्रकार होने के कारण शब्दों से रंग-रेखा या तूलिका का काम लेते थे।' यही नहीं शमशेर संगीत, नृत्य और मूर्ति आदि कलाओं का भी उपयोग हिंदी कविता के लिए करते थे।

और... वो, वो!/तीर-सी भागती स र् र् र्...
स र्रा टे से / इ स ती र से/ उ स ती र को

नौ का एं ही/नौ का एं / दू र त क ...
(काल तुझसे होड है मेरी-88)

कूद के बोला बड़ा सिकंदर
नाच के बोला वाह वा...
नाच के बोला बड़ा सिकंदर
हप्पी हप्पा
आइता कप्पा... (वही-82)

शमशेर द्वारा प्रयुक्त अपनी कविता में छोटे-छोटे शब्द और वाक्य कलाओं में मूकता और भावभंगिमा की भांति अनेक अर्थछवियों और व्यंजनाओं की ओर संकेत करते हैं।

-सुंदर! उठाओ
निज वक्ष

और... कस.... उभर!
क्यारी, भरी गेंदा की
स्वर्णारक्त
क्यारी भरी गेंदा की :

तन पर खिली सारी—अति सुदंर! उठाओ।
(कुछ और कविताएं-138)

समकालीन कवियों में केदारनाथ सिंह ने जहां मूलतः लोक जीवन में सांस्कृतिक ग्राम्य बिंबो का प्रयोग किया है वहीं शमशेर ने प्राकृतिक एवं एन्द्रिय बिंबो का अनुपम चित्र प्रस्तुत किया है।

हां, तेरी हंसी को मैं उषा की भाप से निर्मित
गुलाब की बिखरती पंखुड़ियां ही समझता थाः
मगर वह मेरा हृदय भी कभी छील डालेगी,
मुझे मालूम न था। (प्रतिनिधि कविताएं-147-48)

शमशेर में नैसर्गिक काव्य-प्रतिभा होने के कारण जहां वे अनुभूति के धरातल पर नए-नए विषयों का चयन करते हैं, वहीं पर अभिव्यक्ति हेतु नए-नए बिंबो के साथ पुराने प्रतीकों को नया अर्थ और संस्कार प्रदान करते हैं। 'उषा' नमक कविता में उनके अनूठे बिंब को देखा जा सकता है।

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो। (प्रतिनिधि कविताएं-102)

इस प्रकार उन्होंने परंपरागत प्राकृतिक, अध्यात्मिक, पौराणिक, दार्शनिक, सामाजिक, रोमनी के साथ वैज्ञानिक एवं नए-नए प्रतीकों का प्रयोग किया है।

चांद निकला बादलों से पूर्णिका का।
गल रहा है आसमान
एक दरिया उमड़कर पीले गुलाबों का
चूमता है बादलों के झिलमिलाते
स्वप्न जैसे पांव। (वही-103)

अपने समय के कवियें में शमशेर के कविता की अपनी अलग पहचान है। यह उनके निजी अनुभव, चिंतन एवं सोच के दायरे से उपजी है। जोकि विचार, भाव और भाषा के धरातल पर अनूठी है। जहां एक तरफ़ उनकी कविता में रोमांटिक भाव प्रबल हैं वहीं पर दूसरी तरफ़ प्रगति, प्रयोग एवं समसामयिक चेतना के नए-नए आयाम भी व्यक्त हुए हैं। उन्होंने वैविध्य विषयों को विभिन्न काव्य रूपों में सजाया हैं वे किसी विशेष विचारधारा से कभी नहीं बंधे रहे और ही उनमें बहुत कुछ शोहरत पा लेने की ललक हैं समाज, राष्ट्र, राजनीति, वैश्विक परिप्रेक्ष्य आदि विषयों की अपेक्षा उन्होंने प्रकृति के विविध रूपों में नारी के सौंदर्य की तलाश की है। यह उनके जीवन की भूख रही है। निराला की भांति इनका भी अधिकांश जीवन विधुर का रहा है। शमशेर में मांसल प्रेम की आग प्रकृति के विभिन्न रूपों में नित नए बिंबो के साथ उभरी है। इनकी रचनाओं में विषय और भाषा का एक नया प्रयोग दिखाई दता है। इन्होंने स्थानों, दृश्यों, घटनाओं और कई नामवंत व्यक्तियों पर कविताएं लिखी हैं लेकिन निराला को इन्होंने अपना काव्य गुरु स्वीकार किया। उनके प्रति अपने मनोभावों को वे इस प्रकार व्यक्त करते है–

भूलकर जब रहा-जब-जब राह भटकी मैं
तुम्ही झलके, हे महाकवि,
सघन तम की आंख बन मेरे लिए,
अकल क्रोधिक प्रकृति का विश्वास बन मेरे लिए
जगत के उन्माद का
परिचए लिए - (प्रतिनिधि कविताएं-21)

---

29 का शेष

और अंत में इनका सहज सोचना असहज सोचनेवालों को मीठी फटकार भी है। धर्म और संस्कृति के आवरण तले चल रहे क्रूर व्यवहार को जिस सौम्य ढंग से राह पर लाने का प्रयास है, वह कम ही देखने को मिलता है। विश्व के संप्रदायाचार्यों की करतूतां को झाड़ पिलाता हुई, इतना मानवीय तरीका विश्व-बंधुत्व का, मानवता के ऐक्य का, साथ ही अखंड मानवता की सकारात्मक संवेदना का संदेश शमशेर की कविता ही दे सकती है। ऐसी उदात्तता ही रचनाकार के दायित्व का निर्धारण करती है।

ईश्वर अगर मैंने/अरबी में प्रार्थना की तो तू मुझसे/नराज़ हो जाएगा?

अल्लाह यदि मैंने संस्कृत में/संध्या कर ली तो तू/मुझे दोज़ख में डाल देगा?

शमशेर की कविता के बारे में अभी पता नहीं, कितना समझना शेष है। कितना अभी और कहा जाना है। जो भी हो, शमशेर और उनका साहित्य है बहुत खूब कि अच्छे-अच्छे आलोचकों और समीक्षकों का पानी उतारकर रख दिया। जिसने तह तक पहुंचने का सौभाग्य पाया, उसने तो कहा ही 'शमशेर शमशेर है', परंतु जिसने ऊपर-ऊपर देखा, उसने भी कहा, 'शमशेर-तो बस शमशेर ही है'; पर शमशेर अपने विषय में कहते हैं–

होना है–समझना न था कुछ भी शमशेर
होना भी कहां था वह जो हम समझे थे।